

## सीसीआरएस-चतुर्विध अग्नि-निर्धारण स्केल (CAAS)

अग्नि, पंचमहाभूतों में से एक है, जो कि शरीर के अंतर्गत होने वाले विभिन्न जैविक परिवर्तनों एवं चयापचय रूपी क्रियाओं से परिलक्षित होती है तथा जैविक प्रणाली के विभिन्न परमाणविक, आणविक और कोषकीय स्तरों पर समाहित है, और संयुक्त रूप से शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति के अनुरूप अंग प्रणालियों की विशिष्ट क्रियाओं को क्रियान्वित/नियंत्रित करती है।

**बलमारोग्यमायुश्च प्राणाश्चान्नौ प्रतिष्ठिताः। (वरकसंहिता, सूत्रस्थान, 27/342)**

आयुर्वेद में, अग्नि एक मौलिक अवधारणा है, जिसकी आयु, वर्ण, बल, उत्साह, स्वास्थ्य, उपचय, ओज और प्राण के संरक्षण में अनन्य भूमिका है। स्थान और कार्यात्मकता के आधार पर अग्नि को स्थूल रूप से तीन प्रभेदों में वर्गीकृत किया गया है— जाठराग्नि, धात्वग्नि और भूताग्नि; यद्यपि इनमें से प्रत्येक का एक विशिष्ट और भिन्न कार्यक्षेत्र होता है, तथापि वे शरीर में होने वाले चयापचयजनित परिवर्तनों के लिए परस्पर रूप से उचित समन्वय करती हैं। प्रत्येक व्यक्ति में अग्नि की मात्रा, उसकी गुणवत्ता और कार्य अद्वितीय होते हैं और ये विभिन्न कारकों पर निर्भर होते हैं जैसे कि प्रकृति, आयु, शारीरिक स्थिति, निवास स्थान, ऋतु, मनोवैज्ञानिक अवस्था इत्यादि; और न्यूनाधिक स्तर पर, व्यक्ति की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर भी निर्भर होते हैं।

एक व्यक्ति की अग्नि चार स्तरों के बीच उतार-चढ़ाव कर सकती है — समाग्नि, विषमाग्नि, मन्दाग्नि और तीक्ष्णाग्नि; जो कि विभिन्न आंतरिक एवं बाहरी कारकों पर निर्भर करता है। समाग्नि, अग्नि की आदर्श स्थिति है, और इसकी यह स्थिति बनाए रखने के लिए व्यक्ति की ओर से निरंतर अभ्यास की आवश्यकता होती है।

चिकित्सा व्यवहार में, यह अनुभव में आया है कि जटिल व्यावहारिक नीतियों और तेजी से विकसित पश्चिमी जगत के दृष्टिकोण के अनुरूप भागदौड़ वाली जीवनशैली के कारण व्यक्ति की अग्नि पर बहुत अधिक दुष्प्रभाव पड़ता है। आयुर्वेद के अनुसार, मौलिक रूप से कोई भी निज रोग उत्पन्न होने की प्रक्रिया अग्नि की विकृति के साथ शुरू होती है, जो रोगोत्पादक प्रक्रिया के पिरामिड में आधारस्तम्भ के समान है और इसलिए ही, अग्नि को व्यवस्थित करना व्याधि की रोकथाम व उपचार में सबसे महत्वपूर्ण कदम है। व्यक्तिगत शारीरिक आवश्यकता के अनुरूप आहार-विहार और जीवनशैली का विनियमन अपरिहार्य है, क्योंकि अग्नि की विकृति शरीर में दोष संतुलन को विकृत कर सकती है।

स्वास्थ्यस्वास्थ्य सम्बन्धित पूर्वानुमान में सहायता के लिए अग्नि के महत्व के कारण, CCRAS एक *Chaturvidha Agni Assessment Scale (CAAS)* विकसित कर रहा है, जो अग्नि की स्थिति के निर्धारण करने के लिए उपयोगकर्ता-प्रयोगसुलभ उपकरण है। इसके द्वारा चिकित्सक को अग्नि के व्यवस्थापन के लिए आहार या जीवनशैली या चिकित्सीय प्रबंधन सुनिश्चित करने में सहायता मिलेगी। यह रोगग्रस्त अवस्था में उपयुक्त औषधि, औषधि कल्पना, अनुपान और मात्रा को निर्धारित करने में भी सहायक होगा। साथ ही, इसमें अग्नि और स्वास्थ्य के संरक्षण हेतु उचित आहार और जीवनशैली की भूमिका के विषय में जागरूकता उत्पन्न करने का उद्देश्य भी अंतर्निहित है।

रोगों की रोकथाम और स्वास्थ्यसंवर्धन में स्वस्थ जीवनशैली की अवधारणा समाज के मानस में पुनर्स्थापित करना आवश्यक हो गया है, और इसके लिए CAAS एक सकारात्मक प्रयास है, जिससे चयापचय कार्यों में उत्पन्न न्यूनतम विकृतियों को भी पहचानकर उसे प्रारंभिक अवस्था में ही ठीक करने का उपक्रम किया जा सके ताकि वह बढ़कर दोष-धातुवैषम्य की दुश्चिकित्स्य/अचिकित्स्य अवस्था को न प्राप्त हो जाए। इस प्रकार यह CAAS 'स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम्' के लक्ष्य को भी पोषित करता है।

प्रो. वैद्य करतार सिंह धीमान

मुख्य सम्पादक

आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान पत्रिका

महानिदेशक

केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्

आयुष मंत्रालय, भारत सरकार

नई दिल्ली, भारत

## CCRAS - Chaturvidha Agni Assessment Scale (CAAS)

*Agni* is one among the *Panchamahabhutas* that is attributed with the function of bio-transformation within the body that has evolved and integrated in various levels of the biological system from the atomic, molecular and cellular levels and grossly modulates or controls the activities of the organ systems in performing the intended functions in tandem with the specific physiologic body requirements.

बलमारोग्यमायुश्च प्राणाश्चाग्नेौ प्रतिष्ठिताः। (चरकसंहिता, सूत्रस्थान, 27/342)

In Ayurveda, *Agni* is a fundamental concept that has integral role in maintenance of *Ayu* (Life), *Varna* (Complexion), *Bala* (Innate strength), *Utsaha* (Enthusiasm), *Swasthya* (Health), *Upachaya* (Development), *Ojas* and *Prana* (Vitality). Depending upon the location and functional profile, *Agni* has been classified into 3 types, viz., *Jatharagni*, *Dhatwagni* and *Bhutagni* grossly, each of which has a specific and unequivocal functional spectrum, though they align to coordinate the metabolic transformations in the body. The quantity, quality and function of *Agni* in each individual are unique and are dependent on various factors, viz. *Prakriti*, age, physiological status, habitat, season, psychological state, etc. and are to a very minimal level, even dependent on the socioeconomic state of the individual.

At any stage, *Agni* in an individual can fluctuate between four types, *Samagni*, *Vishamagni*, *Mandagni* and *Teekshnagni*, depending upon various intrinsic or extrinsic factors. *Samagni* is the ideal state of *Agni* and constant effort is required from the part of the individual for maintaining it as such without any gross fluctuations.

In clinical practice, it is noticeable that the impact on *Agni* brought about by the change in lifestyle to suit the complex behavioral strategies and attitudes of the fast-paced westernized world has far-fetching effects. In Ayurveda, fundamentally any pathological process begins with the impairment of *Agni* which is the first building block in the pathological pyramid that creates any disease and regulating the *Agni* is hence, the most important step in prevention of disease. Regulation of diet and lifestyle in tune with the physiological requirement of the body is mandatory thereby being the primordial requirement for the prevention of disease pathogenesis since derangement of *Agni* can provoke the *Dosha* equilibrium in the body.

Owing to the importance of *Agni* as a tool to aid health trajectory predictions, the CCRAS is developing a *Chaturvidha Agni Assessment Scale* (CAAS), which is a user-friendly tool to predict the status of *Agni*; which would help the physician to intervene with subtle alterations in diet or lifestyle practices or a therapeutic management to fine-tune the *Agni*. It would also aid in deciding the appropriate medicine, dosage forms of medicine, vehicle and dose in a diseased state. It also has an embedded objective of creating awareness on the role of proper diet and practices in the maintenance of *Agni* and health.

Despite the polarization of health-seeking tendencies, the perception of healthy lifestyle in prevention of diseases and maintenance of health and well-being has evolved as a need ingratiated into the psyche of the society and the CAAS is an attempt in the path of positive health to rule out discrepancies in the metabolic functions, even before it evolves into an irreparable state where it can vitiate *Dosha-Dhatu Samya* (homeostasis) in the body targeting the principle of 'स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणम्।'



**Prof. Vaidya Kartar Singh Dhiman**

Editor-in-Chief

Journal of Research in Ayurvedic Sciences

Director General

Central Council for Research in Ayurvedic Sciences

Ministry of AYUSH, Government of India

New Delhi, India